B.A. II Part 12/3/21 डॉ० अनुपमा कुमारी
Hindi Hons. सहायक — [illegible]

कुमार और संगीत जैसे निबन्ध में उनकी शैली का चमत्कार दिखाई पड़ता है। सरदार पूर्ण सिंह ने भावनावादी परम्परा को विकसित किया है। ये सत्य आचरण और प्रेमद्वारा समाज के कल्याण की कामना करते हैं। इनकी भाषा में एक नयी लक्षणा और व्यंजना शक्ति का अद्भुत चमत्कार दिखता है।

रामचंद्र शुक्ल के रूप में हिन्दी को एक निबंध लेखक मिला। शुक्ल जी ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम किया। उनके निबन्ध विचार विथि और चिन्तामणि नाम से संकलित किए हुए हैं। शुक्ल जी का स्वरूप कवि का मस्तिष्क आलोचक और जीवन अध्यापन का था। गद्य सरसता और गंभीरता कल्याण भावना के साथ उनके निबंधों में घुली मिलती है। निबन्धों के विषय का गठन, भाषा का गंभीर स्वरूप प्रभाव एवं ओज प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। कहीं-कहीं गंभीर हास्य के छींटे मिल जाते हैं। विचारधारा शृंखलाबद्ध और तर्कपूर्ण है, जो समास शैली द्वारा प्रकट होती है। उन्होंने द्विवेदी युग की शास्त्रीय गद्यशैली को एक नया रूप देकर ऊपर उठा दिया, जिसमें विषयों की विश्लेषण की वैज्ञानिक सूक्ष्मता दिखाई देती है और भावों को प्रेरित करने की विचार से पूर्ण सहृदयता के दर्शन होती है। उनके घनीभूत वाक्यों की वाणी दूर तक जाती है। हिन्दी में ऐसे निबन्ध की संख्या विरल है। शुक्ल जी साहित्य और निबन्ध की दृष्टि से इसे सुलझाने का प्रयास किया है।

शुक्ल जी की परम्परा में उन निबंधकारों का उल्लेख किया जा सकता है, जो विचार और शैली की दृष्टि से अपना अलग मत रखते हुए भी जो साहित्य को जीवन की अभिव्यक्ति मानते हैं। इन निबन्धकारों में नन्द दुलारे वाजपेयी, डॉ० नागेन्द्र, रामविलास शर्मा, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद सिंह आदि प्रमुख हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्धों में सांस्कृतिकता और शास्त्रीयता के साथ-साथ विनोदप्रियता भी है। नगेन्द्र के निबन्धों में पाश्चात्य अनुशीलन की छाप है। रामविलास शर्मा के निबन्धों की भाषा सरस भावानुकूल एवं ओजपूर्ण

B.A. II Part 18/2/21
Hindi Hons

डॉ० [illegible]
हिन्दी विभाग
[illegible]

का महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने अतीत के गौरव को गाया। इन्होंने हिन्दी भाषा, लिपि, व्याकरण, राष्ट्र भाषा आदि विषयों पर निबन्ध लिखा। इनके विशेष प्रसिद्धि का आधार व्यंग्यात्मक गद्य रचनाएं शिव-शंभु का चिट्ठा और खत हैं जिनमें व्यावहारिकता आ गयी है। इस युग के अन्य लेखकों में ज्वाला प्रसाद, तोताराम, राधाचरण गोस्वामी, अम्बिकादत्त व्यास, प्रेमघन आदि हैं।

भारतेन्दु के बाद द्विवेदी युग में नैतिक निबन्ध लिखे गये। इसमें पत्रकारिता की स्वच्छंदता के आधार पर विवेचना और गंभीरता की वृद्धि हुई। निबंध के स्वभाव में एक तरह का अभिजात्यपन आ गया। द्विवेदी जी ने निबन्ध लेखकों को शिष्टता पूर्वक बात करने को सीखाया। इस युग में निबन्ध का रूप सार्वजनिक न रहकर शिष्ट समाज की वस्तु बना। भाषा और साहित्य का संबंध एक नये रूप में सामने आया। विषय वैविध्य के कारण भाषा की शक्ति बढ़ी। उत्कृष्ट अंग्रेजी निबन्धों का अनुवाद हुआ। द्विवेदी जी ने निबन्ध ज्ञान राशि के संचित कोष कहे जाते हैं। श्यामसुन्दर दास, गुलाब राय, मिश्रबंधु भी इसी श्रेणी के लेखक हैं। श्यामसुन्दर दास ने अपनी निबन्धों में पांडित्य पूर्ण खोज एवं ज्ञान को सहेजा है तो गुलाब राय ने विनोदमय शैली के माध्यम से अपनी बातें कही हैं। मिश्रबंधु के निबन्ध शिक्षा मूलक हैं। इनके अतिरिक्त बख्शी जी, पद्म सिंह शर्मा, ब्रजमोहन वर्मा, मोहन लाल महतो आदि ने संस्मरणात्मक एवं चरितात्मक निबन्ध लिखे।

द्विवेदी युग में विशेष रूप से तीन निबन्धकार अपनी विशेष महत्ता रखते हैं। माधव प्रसाद मिश्र, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी और सरदार पूर्ण सिंह। मिश्र जी के निबन्ध में त्यौहारों, तीर्थ स्थान, देश प्रेम एवं सनातन धर्म के प्रति अटूट आस्था की अभिव्यक्ति है। गुलेरी जी के निबन्ध विचार और शैली की दृष्टि से अधिक परिपक्व हैं। इनका व्यंग्य अन्य निबन्धकारों की अपेक्षा अधिक प्रभावकारी एवं मार्मिक है। [illegible]